Skill Development Programme

For Answer Writing

Indian Society (Model Answer)

DATE : 21-April-2018 **TIME : 03:15 pm**

मुख्य परीक्षा

प्रश्न- समलैंगिकता से आप क्या समझते हैं? भारतीय समाज के लिए क्या यह उपयुक्त है? पक्ष एवं विपक्ष में तर्क प्रस्तुत करें। (250 शब्द)

What do you mean by 'Homosexuality'? Is it appropriate for the Indian Society? Give reasons in support and in opposition. (250 Words)

MODEL ANSWER

मुख्य बिन्दु

- भूमिका में समलैंगिकता का अर्थ स्पष्ट करें।
- अगले पैरा में भारतीय समाज में समलैंगिकता की स्थिति को बताएं।
- फिर अगले पैरा में पक्ष एवं विपक्ष में तर्क प्रस्तुत करें।
- अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

उत्तर- समान लिंग के प्रति भावात्मक एवं शारीरिक आकर्षण हो, जिसे समलैंगिक की संज्ञा दी जाती है। यद्यपि लैंगिक आकर्षण प्राणी की मूल प्रवृत्ति रही है, परन्तु विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण को प्राकृतिक माना जाता है। इनको ही दुनिया में सामान्य स्वीकृति मिलती है।

समलैंगिकता भारतीय समाज में ऐतिहासिक रूप से विद्यमान रही, परन्तु कभी भी इसे सामाजिक मान्यता नहीं मिली और इसे सामाजिक विकृति का परिणाम माना गया। सामान्य: भारत में समलैंगिक संबंधों का अधिकार को आम तौर पर उचित नहीं ठहराया जा सकता है। क्योंकि यह न केवल प्रकृति के विरूद्ध है, अपितु हमारे सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न खड़ा करती है।

स्वतंत्रता के पश्चात आईपीसी की धारा-377 के अनुसार (अंग्रेजों द्वारा 1861 में लागू) इसे प्रकृति विरूद्ध मानते हुए घोर अपराध की श्रेणी में रखा गया है और इसका उल्लंघन करने पर कठोर दण्ड का प्रावधान किया गया है।

पक्ष में तर्क-

- समान लिंगियों के प्रति आकर्षण मूल प्रवृत्ति एवं प्राकृतिक है।
- यह व्यक्ति स्वतंत्रता का पोषक है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को इसी के प्रति भावनात्मक रूप से एवं शारिरिक रूप से आकर्षण रखने एवं संबंध रखने की स्वतंत्रता है।
- यह अनुकूल जीवनसाथी के चयन में तथा एड्स जैसी बीमारियों के निदान में सहायक है।

विपक्ष में तर्क-

- इस तरह के संबंध अप्राकृतिक है। अत: ये संबंध प्राकृतिक प्रक्रिया में छेड़-छाड़ है।
- यह मानव समाज में निरन्तरता के समक्ष खतरा है।
- यह विवाह जैसी संस्था पर प्रश्न चिह्न लगाता है।
- इस तरह की घटना से भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था में विखण्डन का खतरा है।
- भारत के संदर्भ में यह परम्परागत भारतीय संस्कृति एवं धार्मिक मान्यताओं के विपरीत है।
- यह विकृत मनोवृत्ति को बढ़ावा देता है।

अत: समलैंगिकता आज दुनिया के कई देशों (फ्रांस, स्वीडेन, दक्षिण अफ्रीका) आदि में वैयक्तिक स्वतंत्रता के अधिकार के तहत् वैधानिक मान्यता प्राप्त है, परन्तु भारत में इसे वैधानिक स्वीकृति नहीं मिली है और वैधानिक स्वीकृति हेतु मांग जारी है।

* * *